- जड़ों को साफ पानी से धोया जाता है और छाया में सुखाकर ठंडे एवं सूखे स्थानों पर आर्द्रता–मुक्त पैकिंग की जाती है।

पैदावार :

- प्रति हेक्टेयर 1.2 टन सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं।

अनंतमूल की खेती

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्रौद्योगिकी का विकास राष्ट्रीय वनस्पतिक अनंसंधान संस्थान, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ–226001, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया है।

साधारण नाम	:	अनंतमूल
वानस्पतिक नाम	:	हेमिडेसमस इंडिकस
कुल	:	ऐसक्लिपिडिऐसी
उपयोगी भाग	:	जड़
सामान्य उपयोग	:	जड़ें कुष्ठ रोग, त्वचा रोग, ज्वर, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, सिफलिस, मूत्ररोग, पुराना गठिया रोग, ल्यूकोरिया आदि में उपयोगी हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

अनंतमूल

हेमिडेसमस इंडिकस
कुल–ऐसाक्लिपिडिऐसी

अनंतमूल एक सदाबहार, खुशबूदार जड़नुमा व पेड़ों के तनों पर उगने वाला छोटा पौधा है। पत्तियां साधारण, एक–दूसरे के सामने, ऊपर की तरफ सफेद एवं पीछे की तरफ सिल्वर की तरह चमकीली सफेद होती हैं।

जलवायु एवं मिट्टी :

- यह पौधा भारत के कटिबंधीय एवं उष्णकटिबंधीय भाग में पाया जाता है। इसे उपयुक्त खाद के साथ एल्केलाइन युक्त मिट्टी में उगाया जाता है।

उगाने की सामग्री :

- एक वर्ष पुराने तनों एवं जड़ों के साथ तनों को काटकर लगाया जाता है। तनों को काटनें की अपेक्षा जड़ों वाले तनों को लगाना बेहतर है।

नर्सरी विधि

पौधा लगाने से पहले की तकनीकः

- जड़/तनों को हारमोन में उपचारित करने के बाद इसे जुलाई से सितम्बर में पॉलीथीन बैग में उगाया जाता है।

उगाने की दरः

- 1 एकड़ भूमि के लिए लगभग 2800 जड़ों की जरूरत होती है।

खेतों में पौधे लगाना

मिट्टी तैयार करना एवं खाद डालनाः

- खेत को जोतकर इसे समतल किया जाता है।
- 60 सेमी X 60 सेमी दूरी छोड़ते हुए 30 सेमी X 30 सेमी के गड्ढे बनाए जाते हैं।
- मिट्टी के साथ उर्वरक (पशु खाद) प्रति गड्ढा 1–2 किग्रा के हिसाब से मिलाया जाता है।

आरोपण एवं पर्याप्त स्थानः

- अगस्त –सितम्बर में खेत में जड़नुमा पौधे आरोपित किये जा सकते है।

पौधा लगाने की विधिः

- इन्हें बगीचों के बीच में उगाया जा सकता है जो इसकी वृद्धि में सहायता करते हैं।

संवर्धन विधिः

- इसके लिए तीन से चार बार निराई की जरूरत होती है।
- निराई एवं छटाई के बीच का अंतरात 30–45 दिन होना चाहिए।

सिंचाई करने की विधिः

- इसकी खेती के लिए उचित आर्द्रता चाहिए, इसलिए ज्यादा सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

फसल का प्रबंधन

खेती तैयार करना एवं उसका प्रबंधनः

- तनों की परिपक्वता के लिए न्यूनतम दो से ढाई साल चाहिए।
- फसल को दिसम्बर से जनवरी में काटा जाता है।

खेती पश्चात् प्रबंधनः

- जड़ों को सावधानीपूर्वक उखाड़ा जाता है तथा जड़ों के कुछ भाग को पुनः उगने के लिए मिट्टी में ही छोड़ दिया जाता है।